प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 51 - B

* APR 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents
1	Apr.12- 01	32				रामायण-मा०उ० : हमारी आत्मा ब्रह्म है,सच्चि०ब्रह्म ही हमारी आत्मा है,ब्रहम के ४पादों का सपत्नीक चारों भाइयों द्वारा निरू०
2	Apr.12- 02	49				वाराह उप०, मैत्राहिणी उप० एवं योग वाशिष्ठ में **ज्ञान की ७ भूमिकाऐं :-** १ शुभेक्षा, २ विचारणा, ३ तनुमानसी, ४ सत्वापत्ति - ब्रह्मविद, ५ असनशक्ति - ब्रह्मविदवर, ६ पदार्थभावना - ब्रह्मविदवरीयान, ७ तुरीयग्राह- ब्रह्मविदवरिष्ठ : प्रगाढ निद्रा
3	Apr.12- 03	29		माण्डूक्य		ब्रह्म से सर्वप्रथम **ओंकार** का प्रादुर्भाव हुआ जिससे सभी त्रिपुटियाँ उत्पन्न हुई, **ओंकार के प्रथम-द्वितीय-तृतीय चरण का निरूपण**
4	Apr.12- 04	38		माण्डूक्य		**हमारा तुम्हारा आत्मा ब्रह्म है**, माया से उसके ४ चरण हैं-१जा०, २स्व०, ३सु०, ४तुरीय, **प्रथम-द्वितीय-तृतीय चरण का निरूपण**
5	Apr.12- 05	28		माण्डूक्य		**ओंकार इदं**-पद से अपना व **तत्**-पद से ब्रह्म को बतलाता है, ओंकार के चौथे चरण तुरीय या ब्रह्म **का स्वरूप निरूपण**
6	Apr.12- 06	38				**गीता १५/१६-२०: क्षर-अक्षर दो पुरुष हैं**,क्षण-२ नाश होने वाला जगत **क्षर** एवं कार्य की अपेक्षा से सत् प्रकृति/माया **अक्षर** है
7	Apr.12- 07	28		माण्डूक्य		**ओंकार का** माण्डूक्य,रामोत्तरतापनी व गोपालतापनी उप०द्वारा **स्वरूप निरूपण,** संसार के सारे नामरूप ओंकार ने धारण कर लिये
8	Apr.12- 08	40				छा०उ०-७वाँ अ०: सनतकुमार का नारद को ज्ञानोपदेश : **भूमा तत्व ही सुखरूप है** भूमा नाम महान अथवा ब्रह्म का है,**तत्त्वमसि**
9	Apr.12- 09	40				भगवान के ज्ञान के साधन **चार कृपाऐं** :: १-ईश्वर २-वेद ३-गुरु ४-आत्मकृपा, भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को आत्म ज्ञान
10	Apr.12- 10	27				ब्रह्म से सर्वप्रथम **ओंकार** का प्रादुर्भाव हुआ जिसने स्वर-व्यंजन, नामपद, क्रियापद एवं समस्त नामरूप जगत का रूप धर लिया
11	Apr.12- 11	40				**कर्म विकर्म अकर्म** निरूपण, माया से उत्पन्न तीनगुण व पंचभूतकृत देह में ही कर्म हैं, इनका आ०अ०दृष्टा आत्मा ब्रह्म **अकर्म** है
12	Apr.12- 12	31		माण्डूक्य		**ओंकार का स्वरूप निरूपण,** प्रथम-द्वितीय-तृतीय चरण तथा **चतुष्पाद का निरूपण** , यह **तुरीय ही ब्रह्म** अथवा अपनी **आत्मा है**
13	Apr.12- 13	43				**गीता १५/१६-२०:**इस लोक में **क्षर-अक्षर दो पुरुष हैं,**हमारा आत्मा द्रष्टा साक्षी तत्त्व ही **'अचल'** है,सब देश काल वस्तु **'चल'** हैं
14	Apr.12- 14	30		माण्डूक्य		ओंकार के चतुष्पाद व **तुरीय का निरूपण** यह द्रष्टा साक्षी तत्त्व **तुरीय ही ब्रह्म** या अपनी **आत्मा है,रामोत्तरतापनी उप० निरूपण**
15	Apr.12- 15	40		1		**सरस्वती रहस्योपनिषद** - संसार में ५ अंश हैं, **'अस्ति भाति प्रिय' ब्रह्म व हमारी आत्मा** का एवं **'नाम रूप'** जगत का स्वरूप है
16	Apr.12- 16	48				अध्यारोप-अपवाद युक्ति से **ब्रह्मोपनिषद में ब्रह्म निरूपण,** निष्प्रपंच ब्रह्म में प्रपंच का अध्यारोप करके फिर मिटाना अपवाद है
17	Apr.12- 17	46				महाकाश मेघाकाश घटाकाश जलाकाश दृष्टा०से ब्रह्म ईश्वर जीव एवं मन/माया/प्रकृति का स्वरूप नि० **चिदाभास की ७ अवस्थाऐं**
18	Apr.12- 18	44			१	भ०राम से लक्ष्मण के बह्म ईश्वर जीव माया और जगत के स्वरूप हेतु प्रश्न, भ०राम द्वारा **ज्ञान वैराग्य व नवधा भक्ति निरूपण**
19	Apr.12- 19	33		माण्डूक्य ३ चरण		नाम और रूप को ही संसार कहते हैं ये सब ओंकार का ही विस्तार है,इसकी ३मात्राओं 'अकार उकार मकार' ने सभी त्रिपुटी का रूप धारण किया है, **ओंकार को ही माया/प्रकृति/प्रणव कहते हैं : ओंकार के प्रथम तीन चरणों का स्वरूप निरूपण**
20	Apr.12- 20	39				सृष्टि क्रम,पँचकोष विवेचना,सभी भूतप्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं,शरीरों की उत्पत्ति और जीवन अन्न से है,आत्मा सबका मूल है
21	Apr.12- 21	23		माण्डूक्य ४था चरण		अथर्ववेद की यह उपनिषद सबसे छोटी किन्तु पूर्ण है, ब्रह्म से सर्वप्रथम **ओंकार** उत्पन्न हुआ जिसने समस्त नाम-रूप यानि संसार व सभी त्रिपुटियों का रूप धर लिया, जा०स्व०सु० तीनों को सिद्ध करने वाला ही ब्रह्म है, भ० को बताने हेतु ही उत्पन्न हुआ है
22	Apr.12- 22	47		2		जीव के ४ दोष ईश्वर में नहीं होते स०र०उ० संसार में ५ अंश **'अस्ति भाति प्रिय नाम रूप'** हैं, पहले **३ द्रष्टा** व शेष **२ दृश्य** हैं
23	Apr.12- 23	49				छा०उ०-७वाँ अ०:नारद सनतकुमार सम्वाद, नारद द्वारा अपनी विद्या अध्ययन का विस्तार में वर्णन व आत्म ज्ञान की प्रार्थना
24	Apr.12- 24	46				भगवान के ज्ञान के साधन **४ कृपाऐं : ईश्वर वेद गुरु आत्म**, ४ खानि ८४ लाख योनियों के बाद मनुष्य देह प्राप्ति ईश्वर कृपा है
25	Apr.12- 25	49				छा०उ०-७वाँ अ०:नारद सनतकुमार सम्वाद, नारद द्वारा अपनी विद्या अध्ययन का विस्तार में वर्णन व आत्म ज्ञान की प्रार्थना
26	Apr.12- 26	40				छा०उ०-७वाँ अ० : सनतकुमार का नारद को ज्ञानोपदेश : **भूमा तत्व ही सुखरूप है** भूमा नाम महान अथवा ब्रह्म का है
27	Apr.12- 27	48				ब्रह्मोपनिषद में **अध्यारोप-अपवाद युक्ति द्वारा ब्रह्म बोध** - अव्यक्त/माया-महततत्व-अहंतत्व-पंचतन्मात्रा-पंचमहाभूत-अखिलं जगत
28	Apr.12- 28	46				भगवान के ज्ञान के साधन **४ कृपाऐं : ईश्वर वेद गुरु आत्म**, ४ खानि ८४ लाख योनियों के बाद मनुष्य देह प्राप्ति ईश्वर कृपा है
29	Apr.12- 29	58				भ०के ज्ञान में व्यवधान 'मल विक्षेप आवरण' के निवारण हेतु ही त्रि०वेद है,ज्ञानरूवरूप हमारा आत्मा मन-बुद्धि-जगत का द्रष्टा है
30	Apr.12- 30	34				भ०के ज्ञान में व्यवधान मायारूपी मेघ 'मल विक्षेप आवरण' के निवारण हेतु ही भगवान ने त्रि०वेद कहा है, **गुरु एवं संत महिमा**
31	Apr.12- 31	46				सुखसिंधु भ०का स्वरूप सच्चिदानंद और संसार का असत-जड़-दुःख है,भ०की चाह से सुख व संसार की चाह से दुःख ही मिलेगा
32	Apr.12- 32	33				**त्रिकांड०वेद आध्यात्मिक त्रिवेणी** है- यमुना कर्म, गंगा भक्ति, सरस्वती ज्ञान व संत चलते फिरते प्रयाग हैं जो वेद-त्रिवेणी बहाते हैं
33	Apr.12- 33	49				गीता १३/२-३ : **क्षेत्र क्षेत्रज्ञ २ पदार्थ हैं**, सभी दृश्य क्षेत्र है एवं द्रष्टा क्षेत्रज्ञ हैं, स्थूल सूक्ष्म एवं कारण शरीर रचना वर्णन
34	Apr.12- 34	33				त्रिकांडमय वेद **आध्यात्मिक त्रिवेणी** है - महिमा - इस त्रिवेणी में स्नान का फल तुरंत मिलता है, **नवधा भक्ति निरूपण**
35	Apr.12- 35	45				परमसत्य ब्रह्म के अधिष्ठान व सत्ता से प्रकृति जगतरूप धरती है,कार्य-कारण माया निरूपण,जा०व्यवहारिक व स्व०प्रातिभासिक है
36	Apr.12- 36	33				राम भक्ति सुरसरी धारा है, नवधा भक्ति निरूपण, १ **नि०नि०**'ब्रह्म' २ **स०नि०** 'ईश्वर-जीव' ३ **स०सा०** 'अवतार' - **निरूपण**
37	Apr.12- 37	38				गीता १३/२-७ : **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ** २ पदार्थ हैं, दृश्य क्षेत्र हैं व द्रष्टा क्षेत्रज्ञ **मैं** हूँ, क्रिया के ५ अंश-शरीर,साभासबुद्धि,इन्द्रियाँ,प्राण,दैवम्
38	Apr.12- 38	00				प्रवचन अनुलब्ध
39	Apr.12- 39	31				भ०विष्णु का ब्रह्मा को गुह्यतम् ज्ञान : सृष्टि के आदि में एक मैं ही था, जा०स्व०सु०-संसार मुझसे ही उत्पन्न होता है मुझमें ही रहता व मुझमें ही विलीन हो जाता है अंत में एक मैं सच्चि० ब्रह्म ही शेष रह जाता हूँ, प्रतीतमान संसार भी मैं ही हूँ, मुझे ढक कर मेरी माया अनेक रूप में ये संसार दिखाती है। **पूर्ण मदः पूर्णमिदम् ...! ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव न परा** ।
40						